अध्याय 2: आत्मकथ्य

विषय-सूची

2 प्रश्नावली · 8 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1	प्रश्न-अभ्यास	7 प्रश्न
प्रश्नावली 2.2	रचना और अभिव्यक्ति	1 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है?

हल

जयशंकर प्रसाद आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उनका जीवन एक साधारण व्यक्ति का जीवन है — इसमें ऐसा कुछ भी नहीं जिसे सुनकर लोग वाह-वाह करें।

कवि की अनेक कारण हैं:

1. जीवन की दुर्बलताएँ: कवि अपनी दुर्बलता और असफलताओं को उजागर नहीं करना चाहता। वह कहता है — 'कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।' उसे भय है कि जो सुनेगा वह उसे खाली घड़े की तरह देखेगा ('यह गागर रीती')।
2. मन की व्यथा अभी शांत नहीं: 'अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।' — कवि की पीड़ा अभी ताज़ी है; वह उसे शब्दों में बाँधने के लिए प्रस्तुत नहीं।
3. निजी स्मृतियों की मर्मव्यथा: कवि के जीवन में एक प्रिय का वियोग है जिसकी स्मृति उसके जीवन का पाथेय बनी है। उस सीवन को उधेड़ना वह उचित नहीं मानता — 'सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?'
4. छोटे जीवन की बड़ी कथाएँ नहीं: 'छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ?' — कवि को लगता है कि उसका जीवन इतना महत्त्वपूर्ण नहीं कि उसे बड़ी कथा के रूप में प्रस्तुत किया जाए।
5. विडंबना की स्वीकृति: 'यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।' — कवि स्वयं अपनी सरलता की विडंबना को समझता है; वह न भूलें दिखाना चाहता है, न दूसरों की प्रवंचना।

उत्तर: कवि आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहता है क्योंकि उसे अपना जीवन साधारण लगता है — उसमें न उज्ज्वल गाथाएँ हैं, न बड़ी कथाएँ। दुर्बलताएँ उजागर होंगी, मन की व्यथा अभी सोई है, और निजी स्मृतियों की मर्मव्यथा को शब्दों में बाँधना उचित नहीं लगता।

प्रश्न 2

आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?

हल

कविता की अंतिम पंक्ति है — 'सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा? / अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।'

इस कथन के कई अर्थ हैं:

1. व्यथा अभी ताज़ी और थकी हुई है: कवि का दर्द और पीड़ा अभी शांत नहीं हुई है — वह 'थकी सोई' है अर्थात

अभी सुप्त है; उसे जगाना उचित नहीं। जो पीड़ा अभी ठीक से पची न हो, उसे व्यक्त करने का समय नहीं।

2. मन का स्वप्न अधूरा है: कवि ने एक सुख का स्वप्न देखा था जो पूरा नहीं हुआ — 'मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।' उस अधूरे स्वप्न की कथा सुनाने का यह उचित समय नहीं।

3. व्यथा को शब्दों में बाँधने की तैयारी नहीं: कवि का अंतर्मन उस पीड़ा को भाषा में लाने के लिए तैयार नहीं है। 'मौन व्यथा' — जो मौन में सोई है — उसे शब्दों में जगाना अभी संभव नहीं।

4. श्रोता का भला नहीं होगा: 'सुनकर क्या तुम भला करोगे' — कवि को यह भी लगता है कि उसकी साधारण आत्मकथा सुनकर दूसरों का कोई भला नहीं होगा, इसलिए यह समय व्यर्थ होगा।

उत्तर: 'अभी समय भी नहीं' से कवि का आशय है कि उसकी मौन व्यथा अभी थकी-सोई अवस्था में है — उसे शब्दों में जगाने का समय नहीं आया। अधूरा स्वप्न, ताज़ा पीड़ा और श्रोता का भला न होने की आशंका — इन सबके कारण कवि इस समय को आत्मकथा के लिए उचित नहीं मानता।

प्रश्न 3

स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

हल

संबंधित पंक्ति: 'उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।'

शब्दार्थ: पाथेय = यात्रा में साथ ले जाया जाने वाला भोजन/संबल; पंथा = रास्ता, यात्रा-मार्ग।

पथिक की उपमा: कवि अपने जीवन को एक थके हुए पथिक की यात्रा के रूप में देखता है।

आशय: कवि के जीवन में एक प्रिय था/थी जिसकी स्मृति अब भी उसके मन में जीवित है। यद्यपि वह प्रिय जीवन में साथ नहीं रहा, उसकी स्मृति कवि के लिए उस पाथेय (भोजन-संबल) की तरह है जो एक थके हुए यात्री को लंबी राह में शक्ति और प्रेरणा देता है।

यानी — वह प्रिय की याद कवि की जीवन-यात्रा का सहारा है। जैसे यात्री रास्ते में पाथेय (खाद्य-सामग्री) लेकर चलता है, वैसे ही कवि उस स्मृति को संबल बनाकर अपनी जीवन-यात्रा जारी रखता है।

यह भाव कवि की विनम्रता और अनुराग को भी दर्शाता है — उसके जीवन में वह एकमात्र उज्ज्वल अनुभव था जो अब केवल स्मृति बनकर रह गया है।

उत्तर: स्मृति को 'पाथेय' बनाने का आशय है — जैसे यात्री लंबी राह में संबल के लिए पाथेय (भोजन) साथ लेता है, वैसे ही कवि ने अपने प्रिय की स्मृति को जीवन-यात्रा का संबल बना लिया है। वह प्रिय जीवन में नहीं रहा, पर उसकी याद ही कवि को थकी राह में आगे बढ़ने की शक्ति देती है।

प्रश्न 4

भाव स्पष्ट कीजिए— (क) मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया। आलिंगन में आते-आते मुसकाकर जो भाग गया। (ख) जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में। अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

हल

(क) भाव:

शब्दार्थ: आलिंगन = गले लगाना, मिलन; मुसकाकर = मुसकराकर।

इन पंक्तियों में कवि ने अपने जीवन के उस अधूरे सुख का वर्णन किया है जिसे वे पाना चाहते थे किंतु पा नहीं सके।
कवि ने एक सुख का स्वप्न देखा था — शायद प्रेम का, सुखद मिलन का — किंतु जब वह सुख मिलने ही वाला था (आलिंगन में आते-आते), वह मुसकराता हुआ भाग गया — अर्थात वह सुख हाथ नहीं लगा।
'स्वप्न देखकर जाग गया' — स्वप्न के समान वह सुख दिखा तो था, पर वास्तविकता में न मिल सका। जाग जाने पर स्वप्न टूट जाता है — वैसे ही कवि का सुख-स्वप्न भी टूट गया।
यह पंक्तियाँ कवि के जीवन की अतृप्त कामना और मार्मिक वेदना को व्यक्त करती हैं।

(ख) भाव:
शब्दार्थ: अरुण-कपोल = लाल (रक्तिम) गाल; मतवाली = मनमोहक, उन्मत्त करने वाली; अनुरागिनी = प्रेम से भरी; उषा = भोर/प्रभात; सुहाग मधुमाया = सुहाग की मधुर माया (विवाहित सुख की मधुर जादुई दुनिया)।
इन पंक्तियों में कवि ने अपनी प्रिया का सौंदर्य-चित्रण किया है।
कवि कहता है — 'जिसके' अर्थात जिस प्रिया के अरुण (लाल) गालों की मनमोहक सुंदर छाया में, प्रेम से भरी प्रभात-वेला (अनुरागिनी उषा) अपने सुहाग की मधुर जादुई दुनिया को पाती थी।
भाव यह है कि वह प्रिया इतनी सुंदर और अनुरागमयी थी कि उसके गालों की लाली में प्रभात की लालिमा भी अपनी सुहाग-माया की पूर्णता पाती थी — मानो प्रकृति भी उस सौंदर्य के प्रति मुग्ध थी।
यह पंक्तियाँ उस प्रिया के सौंदर्य की अलौकिकता और कवि के गहन प्रेम को व्यक्त करती हैं।

उत्तर: (क) कवि ने जिस सुख का स्वप्न देखा था वह मिलने से पहले ही मुसकराकर भाग गया — स्वप्न की तरह दिखा, पर वास्तव में न मिला; जीवन की अतृप्त कामना और मार्मिक वेदना। (ख) प्रिया के लाल गालों की मतवाली छाया में प्रेम भरी प्रभात-वेला अपने सुहाग की मधुर दुनिया पाती थी — प्रिया का सौंदर्य इतना अलौकिक था कि प्रकृति भी उस पर मुग्ध थी।

प्रश्न 5

'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की'— कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

हल

यह पंक्ति कविता के उस भाग में है जहाँ कवि आत्मकथा लिखने से इनकार कर रहा है।
पूरी पंक्ति है: 'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की। / अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।'
आशय: 'मधुर चाँदनी रातें' और 'खिल-खिलाकर हँसते होने वाली बातें' — ये कवि के जीवन के उन उज्ज्वल, सुखद क्षणों का प्रतीक हैं जो कभी थे किंतु अब केवल स्मृति में हैं।
कवि कह रहा है — उन सुखद पलों की उज्ज्वल गाथा मैं कैसे गाऊँ? क्योंकि:
1. वे पल अब नहीं रहे — उनका उल्लेख वर्तमान पीड़ा को और गहरा करेगा।
2. उन्हें शब्दों में बाँधना उनकी पवित्रता और मधुरता को कम कर देगा।
3. खिल-खिलाकर हँसते होने वाली बातें — जो कभी हँसी में होती थीं — उन्हें गंभीर आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत करना विडंबना होगी।
इस प्रकार कवि कहना चाहता है कि उसके जीवन में जो उज्ज्वल और सुखद था, वह आत्मकथा की विषय-वस्तु नहीं बन सकता — क्योंकि वह बहुत निजी, संवेदनशील और कोमल है।

उत्तर: इस कथन से कवि कहना चाहता है कि उसके जीवन में जो मधुर, उज्ज्वल और सुखद क्षण थे (चाँदनी रातें, हँसती हुई बातें) — वे इतने निजी और कोमल हैं कि उन्हें आत्मकथा के रूप में सार्वजनिक करना संभव नहीं। उन्हें शब्दों में बाँधना उनकी पवित्रता को खंडित करेगा।

प्रश्न 6

'आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

हल

'आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा छायावादी है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. तत्सम प्रधान शुद्ध हिंदी:
प्रसाद ने कविता में तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है जो उसे गरिमामय और साहित्यिक बनाते हैं।
उदाहरण: 'अनंत-नीलिमा', 'अनुरागिनी', 'पाथेय', 'प्रवंचना', 'विडंबना', 'मधुमाया'।

2. प्रतीकात्मकता (Symbolism):
कवि ने अपनी भावनाओं को सीधे न कहकर प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया है।
उदाहरण: 'गागर रीती' = खाली मन (रिक्त जीवन); 'कंथा' = अंतर्मन/गुदड़ी; 'मधुप' = मन रूपी भौंरा।

3. बिंब-योजना (Imagery):
कविता में दृश्य, स्पर्श और भाव-बिंब अत्यंत सुंदर हैं।
उदाहरण: 'अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया' (दृश्य-बिंब); 'मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ' (प्रकृति-बिंब)।

4. संगीतात्मकता और लय:
कविता में मात्राओं और तुकबंदी का सुंदर प्रयोग है जो इसे गेय बनाता है।
उदाहरण: 'अपनी' - 'घनी', 'बीती' - 'रीती', 'करने वाले' - 'भरने वाले', 'पंथा की' - 'कंथा की'।

5. सूक्ष्म मनोभावों की अभिव्यक्ति:
छायावादी शैली के अनुरूप कवि ने जटिल मनोभावों को सूक्ष्म और मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है।
उदाहरण: 'यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।'

6. प्रकृति का मानवीकरण / मानवीकरण अलंकार:
'अनुरागिनी उषा' — उषा (भोर) को प्रेम-भरी नायिका के रूप में चित्रित करना प्रकृति का मानवीकरण है।

उत्तर: 'आत्मकथ्य' की काव्यभाषा की विशेषताएँ — (1) तत्सम-प्रधान शुद्ध हिंदी (अनुरागिनी, पाथेय, विडंबना), (2) प्रतीकात्मकता (गागर रीती, कंथा, मधुप), (3) सुंदर बिंब-योजना (अरुण-कपोलों की छाया), (4) संगीतात्मकता व तुकबंदी (बीती-रीती, पंथा-कंथा), (5) सूक्ष्म मनोभावों की अभिव्यक्ति, (6) प्रकृति का मानवीकरण (अनुरागिनी उषा)।

प्रश्न 7

कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था, उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है?

हल

कवि ने सुख के स्वप्न को कविता में दो रूपों में अभिव्यक्त किया है — प्रत्यक्ष वर्णन के रूप में और प्रिया के सौंदर्य-वर्णन के रूप में।

1. अधूरे स्वप्न के रूप में:
'मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।'
कवि ने एक अनाम सुख का स्वप्न देखा था — सुखद मिलन का, पूर्णता का — किंतु वह स्वप्न की तरह ही रहा, वास्तविकता में बदला नहीं।

2. मिलन-के-करीब-आकर-भाग-जाने वाले सुख के रूप में:
'आलिंगन में आते-आते मुसकाकर जो भाग गया।'
वह सुख गले लगने से पहले ही मुसकराकर भाग गया — यह अधूरापन और अतृप्ति का मार्मिक चित्रण है।

3. प्रिया के सौंदर्य के रूप में:
'जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।'
कवि ने सुख को अपनी प्रिया के अरुण (लाल) गालों की मनमोहक छाया के रूप में व्यक्त किया है — जो इतनी उज्ज्वल थी कि 'अनुरागिनी उषा' भी उसमें अपनी सुहाग-माया पाती थी।

4. उज्ज्वल और मधुर पलों के रूप में:
'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की। / अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।'
वह सुख मधुर चाँदनी रातों और खिलखिलाती हँसी के रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

कुल मिलाकर: कवि का सुख का स्वप्न एक अधूरे प्रेम का चित्र है — जो मिलने से पहले ही खो गया और अब केवल मधुर स्मृति बनकर रह गया है।

उत्तर: कवि ने सुख के स्वप्न को — (1) उस प्रिय मिलन के रूप में जो 'आलिंगन में आते-आते मुसकाकर भाग गया', (2) प्रिया के अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया के रूप में, (3) मधुर चाँदनी रातों और खिलखिलाती हँसी की बातों के रूप में — अभिव्यक्त किया है। यह एक अधूरे प्रेम का मार्मिक चित्र है।

प्रश्नावली 2.2 — रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 8

इस कविता के माध्यम से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

हल

'आत्मकथ्य' कविता के माध्यम से जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व की निम्नलिखित झलकियाँ मिलती हैं:

1. विनम्रता और आत्म-साक्षात्कार:
प्रसाद जी एक महान कवि थे, फिर भी वे अपने जीवन को 'छोटे से जीवन' की संज्ञा देते हैं। 'क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ?' — यह वाक्य उनकी गहरी विनम्रता को दर्शाता है।

2. अंतर्मुखी और संवेदनशील स्वभाव:
'थकी सोई है मेरी मौन व्यथा' — वे अपनी पीड़ा को मौन में रखते हैं, बाहर नहीं बिखेरते। यह उनके अंतर्मुखी, संवेदनशील स्वभाव का परिचायक है।

3. प्रेम में गहरी अनुभूति:
प्रिया के अरुण-कपोलों और मधुर चाँदनी रातों का स्मरण बताता है कि प्रसाद जी का हृदय प्रेम की गहरी अनुभूतियों से समृद्ध था। उनके जीवन में एक प्रियतम का वियोग था जिसकी स्मृति उनके लिए 'पाथेय' बनी।

4. यथार्थ की स्वीकृति:
प्रसाद जी न तो अपनी दुर्बलताएँ छिपाते हैं और न ही उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर दिखाते हैं — 'भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं' — वे न भूल उजागर करना चाहते हैं, न दूसरों को दोष देना।

5. जीवन के प्रति दार्शनिक दृष्टि:
'इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास / यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास' — यह पंक्तियाँ बताती हैं कि प्रसाद जी जीवन को एक बड़े दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में देखते थे।

उत्तर: 'आत्मकथ्य' से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की झलक — गहरी विनम्रता (अपने जीवन को 'छोटे से जीवन' कहना), अंतर्मुखी संवेदनशीलता (व्यथा को मौन में रखना), प्रेम की गहरी अनुभूति (प्रिया की स्मृति पाथेय बनाना), यथार्थ की निर्भीक स्वीकृति (न भूल दिखाना, न दूसरों पर दोष) और जीवन के प्रति दार्शनिक दृष्टि।